बिहार की महत्वपूर्ण नदियाँ
[Important rivers of Bihar]

धरातल पर ढाल के अनुरूप बहने वाली सरिता को नदी कहते हैं। प्रायः वर्षा वाले क्षेत्र, हिम शिखर तथा झीलें नदियों के उद्गम स्थल होते हैं। उद्गम स्थल से नदियाँ निकल कर अपने मुहाने की ओर अग्रसर होती है और नाना प्रकार की स्थलाकृतियाँ बनाती हुई अपनी जीवन लीला समाप्त कर देती है।

प्राचीन काल से नदियाँ मानव जाति तथा संस्कृति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यही कारण है कि विश्व की सर्वाधिकांश मानव सभ्यताएँ इन्हीं नदियों के किनारे बसी है। सिंचाई, पेयजल, परिवहन तथा धार्मिक रीति रिवाजों से नदियों को आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप से जुड़ी है। यही कारण है कि हम लोग भारतीय संस्कृति में कहीं माँ तो कहीं जीवन दायिनी कहकर पुकारते हैं। आज बहुद्देशीय परियोजनाओं के कारण इसे भारत के नवीन मंदिर कहा जा रहा है। आज नदियों के किनारे बसे शहर धार्मिक औद्योगिक या पर्यटीय है।

बिहार में अनेक नदियाँ बहती हैं उनमें अधिकांश बरसाती तो कुछ सदानीरा है। कुछ नदियाँ धार्मिक दृष्टिकोण से पवित्र (गंगा, गंडक, पुनपुन तथा फल्गु) तो कोई नदी अपवित्र (कर्मनासा) है। बिहार की प्रमुख नदियों का सविस्तार से वर्णन नीचे किया जा रहा है —

1) गंगा (Ganga) यह बिहार की सर्वप्रमुख तथा धार्मिक नदी है जो बिहार को दो नदी - प्रवाह प्रणालियों में विभक्त

करता है। यह नदी गंगोत्री से निकल कर लगभग 2510 कि० मी० की लम्बी यात्रा कर बंगाल की खाड़ी में जा मिलती है। यह उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश होते हुए बिहार में बक्सर जिले में प्रवेश करती है। इसमें छपरा के पास घाघरा, पटना के पास गंडक, मुंगेर के पास बूढ़ी गंडक तथा कुरसेला के पास कोसी मिलती है। दक्षिण से इसमें मिलने वाली नदियों में कर्मनाशा (चौसा), सोन (हल्दी-छपरा), पुनपुन (फतुहा) मुख्य हैं। गंगा पूरब की ओर बढ़ती हुई मानेहारी घाट के आगे प० बंगाल की सीमा में प्रवेश करती है।

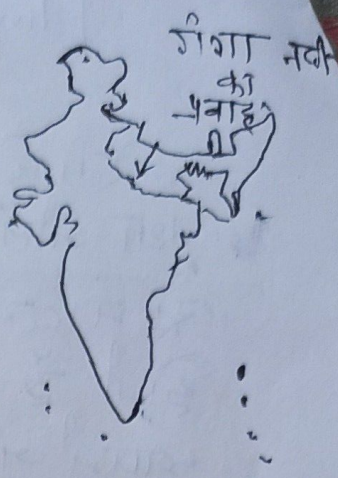

उत्तर बिहार की नदियाँ
(Rivers of North Bihar)

उत्तर बिहार की प्रमुख नदियों में कोसी, गंडक, घाघरा, बूढ़ी गंडक, कमला, बलान, अधवारा समूह की नदियाँ मुख्य हैं। इनमें सबसे प्रमुख नदी है, कोसी।

✓ **कोसी (Kosi)** – कोसी नेपाल में हिमालय पर्वत से निकल कर 724 कि०मी० बहती हुई कुरसेला के पास गंगा में जा मिलती है। विगत दशकों में मार्ग बदलने तथा बाढ़ लाने के कारण इसे बिहार की शोक नदी कहते हैं। इसकी सात शाखाएँ होने के कारण इसे सप्त कोसी भी कहा जाता है।

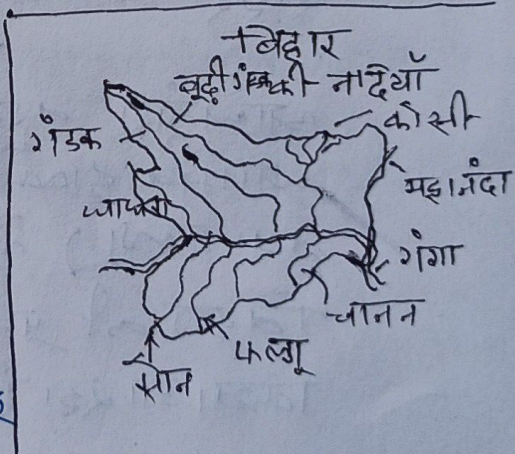

✓ **गंडक (Gandak)** – यह उत्तर बिहार की दूसरी बड़ी नदी है जो महान हिमालय क्षेत्र के अन्नापूर्णा चोटी के समीप से निकल कर प० चम्पारण के समीप बिहार में प्रवेश करती है। इसकी कुल लम्बाई

630 किलोमीटर है। इसी पर प्रसिद्ध गंडक परियोजना बना है। नेपाल में इस नदी को नारायणी भी कहते हैं। त्रिशूला नारायणी गंडक तथा कृष्णा गंडकी इसकी प्रसिद्ध सहायक नदियाँ हैं। यह लम्बी यात्रा करते हुए सोनपुर के समीप गंगा में मिल जाती है।

कमला (Kamla) – यह नेपाल में महाभारत श्रेणी पर्वत के समीप से निकलकर 328 कि०मी० यात्रा कर दरभंगा – सहरसा सीमा के पास कोसी से जा मिलती है। यह मिथिलांचल की सबसे प्रमुख नदी है।

बूढ़ी गंडक (Burhi Gandak) – यह सोमेश्वर पर्वत से निकल कर लगभग 328 कि०मी० की लम्बी यात्रा तय कर गंडक नदी के समांतर बहती हुई गंगा में जा मिलती है। इसकी सबसे प्रमुख सहायक नदी बागमती है।

अधवारा समूह की नदियाँ (Adhwara Rivers of Group) – वे जलधाराएँ जो बागमती के पूरब से कमला नदी तक प्रवाहित होती हैं, अधवारा समूह की नदियाँ कहलाती हैं। अधवारा समूह की नदियों को तीन उपसमूहों में बाँटा जा सकता है –

1) अधवारा, यमुना, सिकाव, बूढ़नद और खिरोई उपसमूह
2) सिंघा, मुरका और रातो उपसमूह
3) धौस, धोमाने और दरभंगा - बागमती - उपसमूह

ये नदियाँ हिमालय क्षेत्र में तेज ढाल पर तेजी से उतरती हैं और मैदानों में मंद ढाल से बहने के लिये प्रसिद्ध हैं।

बागमती (Baghmati) – कोसी के बाद उत्तर बिहार की दूसरी प्रसिद्ध बाढ़ लाने वाली नदी है। इसकी उत्पत्ति महाभारत श्रेणी से हुई है। लालबकेया, लखनदेई और दरभंगा - बागमती मुख्य सहायक नदी है।

दक्षिण बिहार की नदियाँ
(Rivers of South Bihar)

द० बिहार की अधिकांश अधिकांश नदियाँ बरसाती तथा

तथा अपेक्षाकृत छोटी नदियाँ हैं, उनमें सोन, कर्मनाशा, दुर्गावती, पुन-पुन, फल्गू तथा चानन प्रमुख है।

सोन (Sone) – यह दक्षिण बिहार की सबसे प्रमुख नदी है जो छत्तीसगढ़ के अमरकंटक पर्वत से निकलकर लगभग 784 कि०मी० की लम्बी यात्रा तय करने के बाद दानापुर के समीप हल्दी छपरा के पास गंगा में शामिल होती है। इसी नदी पर इन्द्रपुरी बराज स्थित है। इससे सम्पूर्ण शाहाबाद तथा मगध डिवीजन के कई जिले (औरंगाबाद, अरवल, पटना गया) सिंचित हैं।

फल्गु (Phalgu) – यह बिहार और झारखंड के सीमा पर से निकली है तथा 135 कि०मी० की यात्रा तय कर पुन-पुन में मिलती है। मोहाना और लीलाजन दोनों गया के पास फल्गू में मिलती है। यह बौद्ध और हिन्दु धर्मावलम्बियों के लिये पवित्र नदी है।

पुन पुन (Punpun) – झारखंड राज्य के पलामू जिले से निकल कर गया, जहानाबाद और पटना जिला प्रवाहित होते हुए 200 कि०मी० बहकर फतुहा के समीप गंगा में मिल जाती है।

किउल (Kiul) – झारखंड के गिरिडीह जिला से निकलकर लखीसराय, शेखपुरा तथा जमुई जिला बहते हुए 111 कि०मी० चलकर गंगा में मिल जाती है।

चानन (Chanan) – इसे चंदन नदी भी कहते हैं। प्राचीनकाल में इस नदी को चम्पा भी कहा जाता था। यह झारखंड के देवघर जिला से निकलकर 118 कि०मी० की यात्रा कर गंगा में मिलजाती है।

इसप्रकार बिहार की भूमि नदियों का क्रीड़ास्थल है जहाँ सदियों से देश की संस्कृति फैली है।